स्नेहन कर्म (Snehan Karma)

Dr. Ujwala Hivale
Associate Professor (Panchkarma)
MJF Ayurveda Medical College,
Chomu (Jaipur)

स्नेह एवं स्नेहन – व्युत्पत्ति और परिभाषा

- • स्नेह: 'स्निग्ध' + 'घञ्' प्रत्यय
- • स्नेहन: 'स्निह' + 'ल्युट्' प्रत्यय
- • परिभाषा:
- स्नेहनं स्नेहविष्यन्दमार्दवक्लेदकारकम् (च.सू.22/11)
- • चिकनापन, स्त्रवणशीलता, कोमलता उत्पन्न करना।

स्नेहन का परिचय

- • स्निग्धता प्रदान करने की प्रक्रिया।
- • पंचकर्म का पूर्वकर्म।
- • वमन, विरेचन आदि के पूर्व आवश्यक।
- • वात प्रधान रोगों में मुख्य कर्म भी हो सकता है।

स्नेहों के भेद (Types of Sneha)

- • उत्पत्ति भेद: स्थावर, जाङ्गम
- • अन्य भेद:
- संयोग, कर्म, संज्ञा, पाक, मात्रा

स्थावर स्नेह (Vegetable Origin)

- • 18 वनस्पतियाँ:
- तिल, चिरौंजी, अभिषुक, विभीतक, चित्रा, एरण्ड, मधुक, कुसुम्भ, बिल्व, मूली आदि।

जाङ्गम स्नेह (Animal Origin)

- • मछली का तेल
- • घृत (गाय/भैंस/बकरी)
- • वसा व मज्जा (बकरा, हिरण, वराह)

चार उत्तम स्नेह

- 1. घृत
- 2. तैल
- 3. वसा
- 4. मज्जा
- > घृत सर्वोत्तम क्योंकि यह संस्कारानुवर्ती है।

आधुनिक दृष्टिकोण से स्नेह

- • स्थिर तैल: तिल, जैतून, मूंगफली
- • अस्थिर तैल: लवंग, दालचीनी, यूकेलिप्टस
- • मिश्रित तैल: उपर्युक्त दोनों का सम्मिलन

संयोग भेद से स्नेह

- • यमक स्नेह: सर्पि + तैल, तैल + मज्जा
- • त्रिवृत स्नेह: सर्पि + वसा + मज्जा
- • महास्नेह: सर्पि + तैल + वसा + मज्जा

स्नेह मात्रा भेद

- • हसीयसी
- • हुस्व
- • मध्यम
- • उत्तम
- > मात्रा का निर्धारण रोग, रोगी, काल पर निर्भर करता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

- • स्नेह एवं स्नेहन पंचकर्म का महत्वपूर्ण अंग।
- • रोग विशेष एवं दोषों की प्रकृति के अनुसार स्नेह चयन आवश्यक।
- • घृत सर्वश्रेष्ठ स्नेह।
- • आधुनिक विज्ञान में तैलों की स्थिरता एवं उड़नशीलता महत्वपूर्ण।